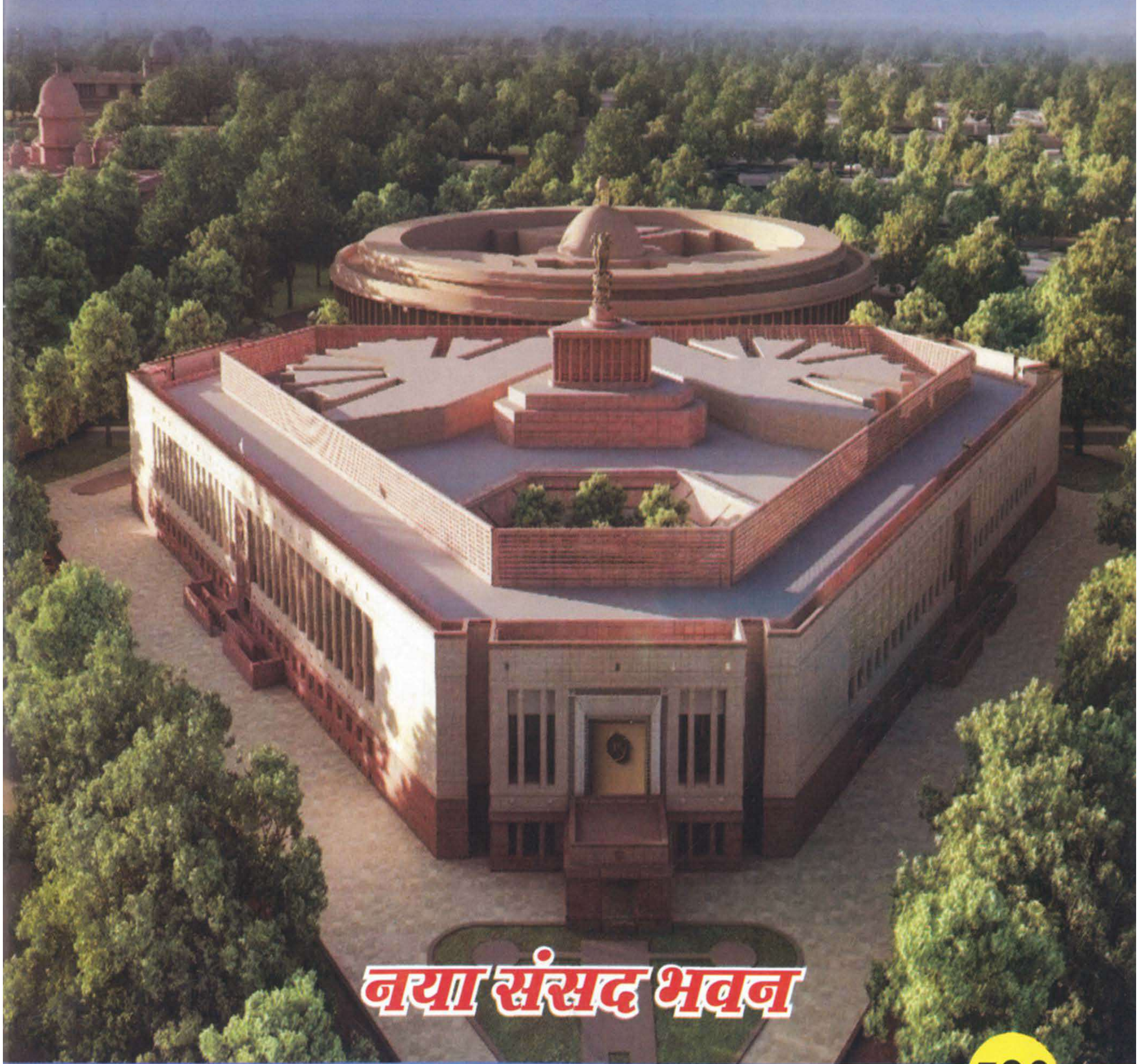
ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

मई-2023



प्रकाशन का 25वां वर्ष

₹20

Real Patidar Library

About Real Patidar books

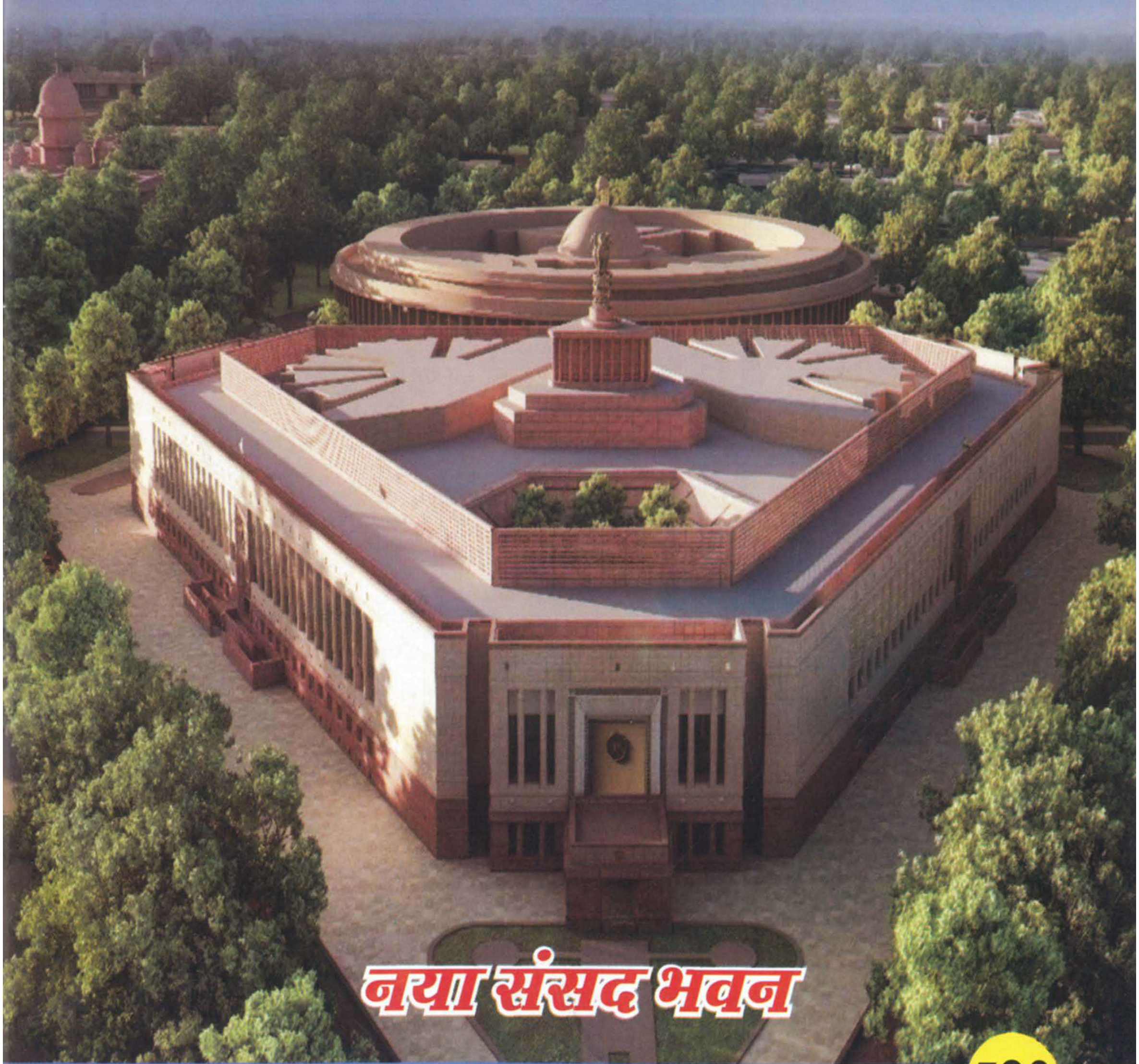
For Reference See Pages: 3, 4, 5.
For page numbers, see the page footer. Page numbers are in 'Page x of y' format

ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

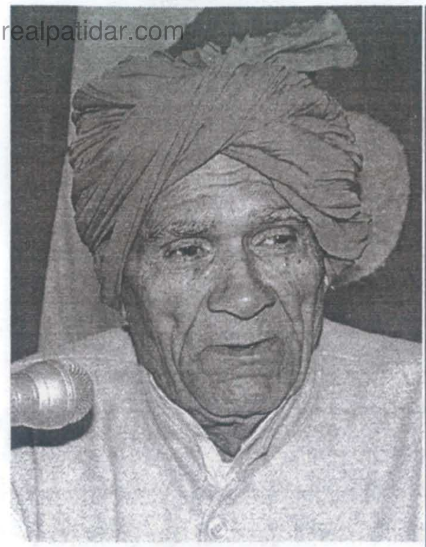
शांतिधर्मी

मई–2023



प्रकाशन का 25वां वर्ष

₹20



ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

प्रकाशन का पच्चीसवाँ वर्ष

मई, २०२३ ई०

वर्ष २५, अंक :४, वैशाख-ज्येष्ठ 2080 विक्रमी

सृष्टि सम्वत् 1960853124, दयानन्दाब्द : 200

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक (स्व०)

●सम्पादक

सहदेव समर्पित

94162 53826, 99963 38552

●उपसम्पादक

सत्यसुधा शास्त्री

●विधि परामर्शक :

डॉ० नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

●कार्यालय व्यवस्थापक

रवीन्द्रकुमार आर्य

अन्तर्यात्रा

सहयोग राशि

एक प्रति	:	२०.०० रु.
वार्षिक	:	२००.०० रु.
दस वर्ष	:	१५००.०० रु.

●सहयोग राशि खाते में जमा कराने के लिये 99963 38552 (व्हाट्स एप) पर सम्पर्क करें।

●उक्त सहयोग राशि में साधारण डाक खर्च सम्मिलित है। साधारण डाक से पत्रिका न मिलने पर हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। यदि आप अपनी प्रति रजिस्टरी से मंगाना चाहते हैं तो एक वर्ष के लिये 300 रुपये अतिरिक्त जोड़कर भेजें।

कार्यालय :

सम्पादक शांतिधर्मी, पो बाक्स नं० 19

मुख्य डाकघर जींद 126102

७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन्द-१२६१०२ (हरि०)

दूरभाष : 9996338552

ईमेल- shantidharmijind@gmail.com

आर्यसमाज और आगाखानी सम्प्रदाय



❑डॉ. विवेक आर्य, drvivekarya@yahoo.com

शिया मुस्लिम सम्प्रदाय के अंतर्गत खोजा नाम के एक वर्ग के मुसलमान अविभाजित भारत के गुजरात, महाराष्ट्र, सिंध, राजस्थान, पंजाब आदि प्रांतों में पाए जाते थे। ये इस्माइल मुसलमान के नाम से भी जाने जाते थे। कालांतर में यह सम्प्रदाय खाड़ी देशों और अफ्रीका महाद्वीप में मुख्यत: व्यापारियों के माध्यम से फैल गया। इसी संप्रदाय में आगा खान नाम के 49 वें इमाम हुए। इनके बाद यह संप्रदाय 'आगा खानी' के नाम से भी जाना जाने लगा। पाकिस्तान के जनक और लाखों निरपराध लोगों की हत्या के दोषी मुहम्मद अली जिन्ना का जन्म भी इसी खोजा संप्रदाय में हुआ था। 'खोजा' शब्द फारसी के 'ख्वाजा' शब्द से बना है।

13वीं सदी में पीर सदरुद्दीन ने गुजरात के हिन्दू लोहाणा, सुमरा, भाटिया, कुनबी, रबारी आदि को मुसलमान बनाने के लिये इसी संप्रदाय की शाखा की स्थापना की थी- सतपंथ संप्रदाय। यह अर्धमुस्लिम मत है और इसका केन्द्र पीराणा (अहमदाबाद के पास) स्थित है। गुजरात के छद्म मुस्लिम पोषित सतपंथ सम्प्रदाय के साहित्य को पढ़ने से ज्ञात होता है कि मुस्लिम मत में प्रचलित शब्द (दों) और क्रियाओं का प्रयोग इस पन्थ में भी होता है।

इस्लाम में एक पन्थ है- 'सिरात-अल-मुस्तकीन', जिसका भारतीय नाम है 'सतपंथ'। सतपंथ के आद्य संस्थापक/आद्य धार्मिक गुरु सैयद कबीरुद्दीन के पुत्र, इमामुद्दीन अब्दुर रहीम सैयद उर्फे इमामशाह बावा उर्फे इमामशाह महाराज की कबर पीराणा में है जो सतपंथियों के लिए श्रद्धा का केन्द्र है।

सतपंथ नाम बहुत मोहक रखा है और यह हिन्दुओं को सरलता से भ्रमित कर सकता है। हिन्दुओं की दोषपूर्ण 'अवतारवाद' की मान्यता का सहारा लेकर शिया इस्लाम के हजरत मौला अली तालिब उर्फ अली जो इस्लाम मत के संस्थापक मुहम्मद पैगम्बर के चचेरे भाई थे और दामाद थे, उनको अली=विष्णु भगवान का अन्तिम अर्थात् 10वें अवतार के रूप में प्रस्तुत किया और भारतीय 'निष्कलंकी नारायण' नाम दिया। सतपंथ सम्प्रदाय से जुड़े अनुयायी व्यक्ति के नाम से कोई जान नहीं सकता क्योंकि नाम हिन्दू जैसा ही रखते हैं, लेकिन उनकी विचारधारा और प्रवृत्तियाँ मुस्लिमों जैसी ही हैं। मृत्यु के बाद दफनाना और मन्त्रों को कुरआन के शब्दों के साथ बोलना, स्वयं को अथर्ववेद के साथ जोड़ना आदि भ्रामक कार्य किए जाते हैं।

पं. चमूपति (द कल्ट ऑफ़ आगा खान, भाग 2, द वैदिक मैगज़ीन, गुरुदत्त भवन, लाहौर, मई 1926, पृ. 111-123) आगा खानी संप्रदाय पर अंग्रेजी में लेख में लिखते है। उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

'आगा खानी कुरान को कम ही पूछते हैं। उनके अनुसार कुरान का प्रकाश 1300 वर्ष पूर्व हुआ था। आज उनके लिए 700 वर्ष पुराने गणन (ganans) ही बहुत हैं। ये पीर सदरुद्दीन द्वारा प्रतिपादित हैं। इनके ग्रंथों के अनुसार पीर सदरुद्दीन ने दसवें अवतार होने की भविष्यवाणी की थी। पीर सदरुद्दीन की कब्र मुलतान, पूर्व बहावलपुर स्टेट में वर्तमान पाकिस्तान में है। पीर सदरुद्दीन के भी चार नाम- सदरुद्दीन, सहदेव, हरिश्चंद्र और बार गुरु प्रसिद्ध हैं। इनके ग्रंथों में कुरान की जानकारी अति शून्य है। इनके अनुसार ये अथर्ववेद से शिक्षा ग्रहण करते हैं। इनकी आरती इस प्रकार है- अथर्व वेद मनहि जो कोई माहिर, दसवां दिन दयाल प्रभु बैठा चाहे जाहिर। अर्थात् जो अथर्ववेद में पारंगत होगा, उसे दसवें अवतार के दर्शन होंगे।

आगा खानी संप्रदाय के लोग अली को दसवां अवतार मानते हैं। उनसे पहले के 9 अवतार मत्स्य, कूर्म, वामन, वराह, नरसिंह, परशुराम, बुद्ध, राम, कृष्ण हैं। यह दसवां अवतार जम्बूद्वीप के मुलतान में होगा। उनकी माता का नाम बीवी जुलेखा और पिता का नाम हासिम अबू तालिब, गुरु नबी मुहम्मद और शक्तियां बीवी फातिमा होंगी। कलियुग में ये अवतार पश्चिम अर्थात् अरब में

होंगे। जो दसवें अवतार को मानेगा उसी को मोक्ष मिलेगा। इनके अनुसार कयामत के दिन, पुनर्जन्म आदि कुछ नहीं है। ये लोग पशुबलि को मान्यता नहीं देते, उसके स्थान पर ईद के दिन खीर बांटते है। ये मक्का मदीने आदि की हज यात्रा में भी विश्वास नहीं रखते। इसके स्थान पर आगा खान खुद अपने यहाँ पर बड़े बड़े खर्चीले समारोह कर अपने आपको ईश्वर दिखाने का प्रयास करता था। बहु-विवाह को भी नकारा गया। अपनी कमाई का दसवां भाग दान देने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस दान को देने से जन्नत के दरवाजे खुल जाते हैं, ऐसा प्रसिद्ध किया गया। इनके भजनों में ईड़ा, पिंगला, मेरु, अनहत आदि शब्दों के प्रयोग से हठ योग का प्रभाव भी कुछ कुछ दिखता है। कुल मिलकर यह संप्रदाय हिन्दुओं के समीप अपने आपको दिखाकर उन्हें प्रभावित करता है।'

आर्यसमाज की चुनौती

आर्यसमाज के प्रचार की लहर पंजाब होते हुए सिंध से लेकर गुजरात में भी फैल रही थी। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने देखा कि खोजा संप्रदाय हिन्दुओं को भ्रमित कर मुसलमान बना रहा है तो उन्होंने इनके दुष्प्रचार को रोकने के प्रयास आरम्भ कर दिए। इस विषय में राष्ट्रीय अभिलेखागार में जानकारी मिलती है-

आगा खान का पंजाब में अप्रैल 1911 में दौरा हुआ। इस दौरे पर उनकी जनसभाओं में भारी भीड़ उमड़ी। इस भीड़ में भाग लेने वाले आगा खानियों को शम्शी कहा जाता था। ये हिन्दू नाम से रहते थे और खोजा विचारधारा के अनुसार धार्मिक मान्यता रखते थे। इस भीड़ में सवर्ण और असवर्ण सभी हिन्दू थे। राष्ट्रीय अभिलेखागार की रिपोर्ट के अनुसार आर्यसमाज हिन्दुओं को बड़ी संख्या में शम्शी बनते देख जागरूक हुआ। आर्यसमाज ने शम्शी बने हिन्दुओं की शुद्धि के कार्य को प्रारम्भ कर दिया। आर्यसमाज के शुद्धि कार्य के प्रेस में भी चर्चे हुए। इनमें लाहौर के हिंदुस्तान अख़बार में सम्बंधित जानकारी प्रकाशित हुई। पेशावर में आर्यसमाज ने 22 मई 1911 को अमीरचंद और फकीरचंद नाम के दो शम्शी मुसलमानों को शुद्ध किया। (होम पोलिटिकल 1911 जून)

राष्ट्रीय अभिलेखागार के अनुसार आर्यसमाज के शुद्धि प्रचार से आक्रोशित होकर आगा-खानियों के वजीर ने उनकी ओर से भारत के वायसराय को शिकायत कर दी। उन्होंने प्रेस के माध्यम से आर्यसमाजियों द्वारा आगा खान पर आक्षेप करने का आरोप लगाया। उन्होंने प्रेस एक्ट के तहत आर्यसमाजियों पर कार्यवाही करने के लिए सरकार से शिकायत की। (मेमोरियल फ्रॉम सर्टेन हिन्दुस् ऑफ़ द पंजाब कम्प्लेनिंग ऑफ़ द डेफामटोरी एंड लिबेलौस लैंग्वेज अडॉप्टेड बाय आर्यसमाजिस्ट टुवर्ड्स सर सुल्तान मुहम्मद शाह आगा खान, होम पोलिटिकल, मई 1911)

आर्यसमाज की लहर पंजाब होते हुए सिंध से लेकर गुजरात में भी फैल रही थी। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने देखा कि हिन्दुओं को भ्रमित कर मुसलमान बनाया जा रहा है तो उन्होंने इसे रोकने के प्रयास आरम्भ कर दिए।

एक और आगा खानी सम्प्रदाय हिन्दुओं को मुसलमान बनाता था दूसरी ओर आर्यसमाज उनकी शुद्धि कर उन्हें वापिस हिन्दू धर्म में प्रविष्ट करने के लिए तत्पर था। पूर्व में हिन्दुओं के खेत की खेती कोई भी काट ले जाता था। यह स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का प्रताप था जो उन्हें पहली बार चुनौती मिलने लगी थी। यह संघर्ष आगे ओर बढ़ा। इस विषय में खोजा इस्माइली की वेबसाइट (heritage.ismaili.net) से निम्नलिखित जानकारी प्राप्त हुई है-

इस सम्प्रदाय को चुनौती देने वालों में सबसे प्रमुख नाम पं. राधा कृष्ण का था। आप आर्यसमाज के प्रधान थे। आप कभी स्वयं खोजा इस्माइली थे और कैम्बलपुर, रावलपिंडी के रहने वाले थे। 1913 में आपने अंग्रेजी और गुजराती में 'इस्माइलियों से 25 प्रश्न' शीर्षक पुस्तक लिखकर प्रकाशित की जो अत्यंत प्रसिद्ध हुई। आपने 1919 में बम्बई से भी आगा खानी संप्रदाय पर एक पुस्तक प्रकाशित की थीं, जिसका शीर्षक था-'आगा खान और उसके करिश्मे।' इस्माइली प्रचारक करम हुसैन ने इसके उत्तर में 'आगा खानी खुदाई नो जरकत' पुस्तक प्रकाशित की थीं। पं. जी पर चारों ओर से प्रहार होने लगे, जिसके वे प्रत्युत्तर देते थे। उन्हें शांति भंग करने का आरोप लगाकर जेल भेज दिया गया। वहां उनकी मृत्यु 1921 में हो गई। उनकी मृत्यु को खोजा मुसलमानों ने 'खुदाई चमत्कार' घोषित करने का प्रयास किया। ऐसे ही

(शेष पृष्ठ 33 पर)

आर्यसमाज और आगाखानी- पृष्ठ 19 से

साहित्य के माध्यम से आगा खान के विचारों की तार्किक समीक्षा करने में पं. केशराम जी का नाम अग्रगण्य है।

2 जनवरी 1917 को आर्यसमाज के शिष्ट मंडल ने महात्मा गाँधी को आगा खान द्वारा हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के षड्यंत्र से अवगत करवाया। गाँधीजी ने कुछ परिवर्तित हुए हिन्दुओं को समझाने का प्रयास किया, पर उन्हें सफलता नहीं मिली। आर्यसमाज ने अन्य कुछ पुस्तकें भी आगा खानी पर लिखीं, जैसे- आगा खान गुप्त पंथ, दम फरेब, ढोल की पोल आदि। इनके उत्तर में आगा खानियों ने भी पुस्तकें प्रकाशित कीं, जैसे- इब्राहिम जुसब वरतेजी ने सूरत के पं. रामचंद्रजी की पुस्तक के उत्तर में 'इस्लामिक चाबुक', पं. राधाकिशनजी की पुस्तक के उत्तर में 'आफताब-ए-हकीकत', आर्यप्रकाश के उत्तर में 'आर्यप्रकाश नी उधताई', 'खुली चिट्ठी नू भोपरु', 'आर्यसमाजी पंडितों नु पुकार' प्रकाशित कीं।

आर्यसमाज के शीर्ष संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने इस्माइल मुसलमानों के द्वारा आरम्भिक काल में सत्ता हथियाने के लिए की गई राजनीतिक हत्याओं, षडयंत्रों, अपराधों को दर्शाने वाली जोसफ वोन हैमर की पुस्तक 'द हिस्ट्री ऑफ़ द असैसिन्स' को 1926 में प्रकाशित किया था। यह पुस्तक सन 1090 से 1275 के मध्य निज़ारी इस्माइली मुसलमानों द्वारा मुस्लिम और ईसाई नेताओं के द्वारा किये गए अपराधों की प्रामाणिक जानकारी देती है। पं. चमूपति जी के अफ्रीका के दौरे के समय पानी के जहाज पर उनका एक खोजा मुस्लिम से वार्तालाप और बाद में अफ्रीका में भेंट का प्रसंग भी मिलता हैं। पं. जी ने इस संप्रदाय की मान्यताओं का सूक्ष्मता से अध्ययन कर इस पर 'वैदिक मैगज़ीन' में दो कड़ियों में लेख भी लिखे थे। इस प्रकार गुजरात और पंजाब में आगा खानी संप्रदाय के कार्यों पर आर्यसमाज ने अंकुश लगाया था।

वर्तमान में भी गुजरात के परिश्रमी पटेल/ पाटीदार समुदाय के लोगों ने सतपंथ सम्प्रदाय के बारे में अधिक आधिकारिक जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए बृहद्काय ग्रंथ 'सतपंथ छोड़ो' (गुजराती भाषा) में लिखा है। यह इंटरनेट पर उपलब्ध है। इसे सबको पढ़ना चाहिए और सत्य को ग्रहण कर असत्य का त्याग करना चाहिए।

कब जागेंगे हम- पृष्ठ 13 से आगे

साथ अन्याय करते हैं और यहां पर अपनी जड़ें जमाये रखने के लिए कुटिलता का प्रयोग करते हैं तो वह कुछ-कुछ समझ में आ सकता है, परन्तु यहां के लोग आंखें मींचकर यदि उनका ही अनुसरण करने में स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं तो फिर उन्हें भला क्या कहा जाये? विडम्बना तो यह है कि यही घातक एवं विषैली विचारधारा है जो आजादी के बाद भी पढ़ने वाले हमारे बच्चों के मन में डाली जा रही है। (विद्यालयों की इतिहास पुस्तकों में अब सुधार हो गया है) फिर आर्यसमाज के प्रचारक कितना ही गला फाड़ें, क्या फर्क पड़ता है!

अपने व्याख्यान में मैंने आगे चलकर उस अध्यापिका से पूछा कि यदि आर्य बाहर से आये थे तो क्या राम, दशरथ, सीता, लक्ष्मण, भरत आदि तथा कृष्ण, अर्जुन, भीम आदि विदेशी थे? यहाँ के नहीं? कितने खेद की बात है कि हम कभी यह विचार ही नहीं करते कि-
हम कौन थे, क्या हो गये, और क्या होंगे अभी।

बस खाने, पीने, सन्तान पैदा करने और समय काटने के अतिरिक्त हमारे पास करने को कुछ भी नहीं। हमारा रहन सहन, भोजन, व्यवहार, भाषा आदि सब कुछ वैसा ही हो गया जैसा कि कभी अंग्रेजों ने चाहा था। आज न तो हमारी वेशभूषा ही हमारी रही, न हमारी संस्कृति ही बची और न ही हमारे अन्दर अपने महान् पूर्वजों के प्रति श्रद्धा का कोई तत्त्व शेष बचा है। भौतिकता की इस आंधी ने तो देश के वातावरण को और भी अधिक विषाक्त बना दिया है। आज लड़कियों की वेशभूषा में से सभ्य पहनावा समाप्त हो चुका है और ऊल-जलूल भड़काने वाली पोशाकें उन्हें अच्छी लगने लगी हैं। वे किसी भी दृष्टि से भारतीय नहीं लगती हैं।

अंग्रेजी भाषा बोलने में अपने को बड़ा मानते हैं और स्वदेशी भाषा हिन्दी बोलने में उन्हें शर्म आती है। आखिर कहां जा रहे हैं हम? आने वाली सन्तानें क्या अपने पूर्वजों के प्रति कोई मान-सम्मान का भाव रख पायेंगी? क्या आर्यों की वह महान धरोहर जीवित रह पायेगी? हम भारत में ही रह कर भारतीयता को सुरक्षित रख पायेंगे? हम लोग इस दिशा में क्या-क्या आवश्यक कदम उठा रहे हैं? आखिर कब जागेंगे हम?